



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I

PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० १६] नई दिल्ली, बुध्द्वतिवार, जनवरी २६, १९६७/माघ ६, १८८८

No. 16] NEW DELHI, THURSDAY, JANUARY 26, 1967/MAGHA 6, 1888

उस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

New Delhi, the 28th January 1967

No. 31/11/66-Ad.III-B.—The President is pleased, on the occasion of Republic Day, 1967, to award an Appreciation Certificate to the undermentioned officer of the Collectorate of Central Excise, Bombay, for exceptionally meritorious service rendered when undertaking a task even at the risk of his life:—

Name of the officer and rank:

Shri William James Robb, Superintendent of Central Excise.

Statement of services for which the Certificate is awarded.

Shri Robb received information at 02:00 hrs. at night on the 25th May, 1966 that contraband goods would be landed at the Training Ship Jawahar Jetty, Pilot Bunder, Bombay. He took immediate action to collect whatever staff was available at that hour of the night and proceeded to the suspected landing area. There, he kept a secret watch and then rushed into action at the proper time. At the Jetty, Shri Robb found one truck and two mechanised fishing vessels, loaded with smuggled goods and the smugglers. With the meagre staff of only three men at his disposal, Shri Robb challenged the smugglers numbering over

twenty. Shri Robb successfully intercepted the truck and the two fishing vessels which had started their engines to get away to sea. Not only did Shri Robb intercept the truck and the two fishing vessels, he also overpowered and detained seven of the smugglers at the risk of his life. Shortly after the vessels were intercepted in complete darkness, one of the fishing vessels which was fully loaded with contraband goods broke its moorings and started drifting into the open sea. Shri Robb without hesitation, and with complete disregard for his personal safety, dived into the open sea and swam to the drifting vessel. He boarded it and brought the vessel and the contraband back safely to the Jetty. Shri Robb's quick action in the face of overwhelming odds and when he was completely outnumbered, resulted in the seizure of the two mechanised vessels, one truck and the smuggled goods valued at Rs. 3,00,660. Shri Robb, in this operation, has displayed a keen sense of resourcefulness, leadership and conspicuous bravery of a very high order.

In another case wherein Shri Robb's above-mentioned qualities have come to notice very conspicuously is the Juhu Beach Watches case. Shri Robb received information at about 23.00 hrs. on the night of the 4th July, 1966 that smuggled goods would be landed at Juhu Beach, Bombay during the night. Shri Robb took immediate action and collected whatever staff was available at that hour of the night and proceeded to the suspected area with the Assistant Collector and maintained an unobtrusive watch. It was noticed that some persons were moving on the sea shore in a suspicious manner. Shri Robb went into action to intercept these persons as they were suspected to be landing the contraband. The smugglers attacked the officers and in order to detain the smugglers the Assistant Collector and Shri Robb had to open fire with their revolvers and grapple with them. Shri Robb's indifference to personal danger and prompt action resulted in the interception and detention of five notorious smugglers and also seizure of wrist watches and other contraband on the sea shore valued at Rs. 20,00,000. All the five persons detained are known to be dare devils. During this operation, Shri Robb has displayed cool courage, a deep devotion to duty, presence of mind and determination to work even at the risk of his life.

Apart from the above two cases, Shri Robb has helped in the detection of several cases involving a total of over 80,000 tolas of gold.

2. The award is made under Clause (a) (i) of para 1 of the Scheme governing the grant of awards to the officers and staff of the Customs, Central Excise and Land Customs Departments published in Part I, Section 1 of the Gazette of India Extraordinary Notification No. 12/139/59-Ad. III-B, dated the 5th November, 1962.

Shri Robb being a gazetted officer will not be eligible for any monetary allowance alongwith the award.

D. P. ANAND, Addl. Secy.

बिस्स मंत्रालय

(राजस्व तथा बीमा विभाग)

अभिसूचना

नयी दिल्ली, 26 जनवरी, 1967

संख्या 31/11/66-ए०डी०-3-बी०—राष्ट्रपति जी, गणतन्त्र दिवस 1967 के अवसर पर सीमाशुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क समाहर्ता कार्यालय, बम्बई के निम्नलिखित इ.फ.सर को अपने जीवन को भी संकट में डालने वाला कार्य करते हुये की गयी असाधारण प्रशस्त सेवा के लिए प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं :—

अफसर का नाम तथा पद

श्री विलियम जेम्स रॉब,

केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क के अधीक्षक ।

सेवाओं का वर्णन, जिनके लिये प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया है :

25 मई, 1966 को रात के 2 बजे श्री राँब को सूचना मिली कि प्रशिक्षण पोत जवाहर जेटी, पायलट बन्दर, बम्बई में अवैध माल उतारा जायेगा । श्री राँब ने तत्परता से कार्यवाही की तथा रात के उस समय जो भी कर्मचारी मिल सके उन्हें लेकर उस स्थान की ओर गये जहाँ माल उतरने के बारे में सूचना मिली थी । वहाँ वे छिपकर पहरा देते रहे तथा कार्यवाही करने के लिए ठीक समय पर तैयार पड़े । जेटी पर, श्री राँब ने अवैध माल तथा तस्करोँ से भरा एक ट्रक तथा दो मत्स्य-पोत पाये । अपने पास सिर्फ़ तीन आदमी होते हुये भी, श्री राँब ने तस्करोँ को ललकारा जो संख्या में जीस से भी ऊपर थे । मत्स्य-पोतोँ ने खुले समुद्र में ब्रह्म जाने के लिए अपने इंजिन चालू कर दिये थे, तथापि श्री राँब ने केवल ट्रक को तथा मत्स्य-पोतोँ को रोक लेने में सफल हो गये, परन्तु अपने प्राण संकट में डाल कर वे सात तस्करोँ को भी काब करके हिरासत में लेने में सफल हो गये । घोर अंधेरे में इन पोतोँ को रोकने के थोड़ी ही देर बाद उन में से अवैध माल से लबालब भरा एक पोत घाट से बाधने का रस्ता तोड़कर खुले समुद्र में बह चला । बिना हिचकिचाहट के तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करके श्री राँब ने खुले समुद्र में छलांग लगा दी और तैर कर बहती हुई नौका के पास पहुँच गये । वे नौका पर चढ़ गये तथा नौका एवं अवैध माल को ज्यों का त्यों जेटी तक ले आये । उत्कट कठिनाइयाँ होते हुए तथा तस्करोँ की संख्या के मुकाबले में अपने पास बहुत थोड़े आदमी होते हुए भी, श्री राँब ने तत्परता से जो कार्यवाही की, उससे दो मशीन-चालित नौकाएं, एक ट्रक तथा 3,00,660 रुपये मूल्य का अवैध माल पकड़ा गया । इस कार्य में श्री राँब ने प्रखर प्रयुत्पन्नमति, नेतृत्व तथा बहुत उच्चकोटि की विशिष्ट बीरता का परिचय दिया है ।

एक अन्य मामले में भी, श्री राँब के उपर्युक्त गुण विशिष्ट रूप से परिलक्षित हुए; वह मामला है जुहू तट का बड़ी कांड । 4 जुलाई, 1966 को रात्रि के 11 बजे श्री राँब को सूचना मिली कि रात को बम्बई के जुहू तट पर चोरी-छिपे लाया गया माल उतारा जायेगा । श्री राँब ने तत्परता से कार्यवाही की और रात्रि के उस समय जो भी कर्मचारी मिल सके उन्हें इकट्ठा किया तथा सहायक समाहर्ता के साथ संदिग्ध क्षेत्र की ओर बढ़े और भूप चाप चौकसी करते रहे । यह देखा गया कि कुछ व्यक्ति सन्देहपूर्ण हालत में समुद्र तट पर घूम फिर रहे थे । श्री राँब ने उनको रोकने की कार्यवाही की, क्योंकि वे अवैध माल उतारते लग रहे थे । तस्करोँ ने अफसरोँ पर आक्रमण कर दिया और तस्करोँ को रोक रखने के लिये सहायक समाहर्ता तथा श्री राँब अपनी पिस्तौल से गोलियाँ चलाते हुए उनसे गुत्थम-गुत्था हो गये । श्री राँब द्वारा व्यक्तिगत खतरे की उपेक्षा तथा तत्पर कार्यवाही की जाने के कारण चोरी-छिपे माल लाने वाले पाँच कुख्यात तस्करोँ को रोक कर पकड़ा जा सका, तथा 20,00,000 रुपये मूल्य की कलाई बड़ियाँ एवं अन्य अवैध सामान समुद्र तट पर पकड़ा जा सका । पकड़े गए पाँचों व्यक्ति माने हुए मरने-मारने वाले तस्कर हैं । इस अभियान में श्री राँब ने निश्चल साहस, अगाध कर्तव्यनिष्ठा, प्रयुत्पन्नमति तथा प्राण भी संकट में डाल कर कार्य करने की निश्चयात्मक बुद्धि का परिचय दिया है ।

उपर्युक्त दो मामलों के अलावा श्री राँब ने अन्य कई मामलों के पकड़ने में सहायता की है जिन में कुल 80,000 तोले सोना पकड़ा गया है ।

2. यह पुरस्कार सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा स्थल सीमा शुल्क के अफसरों और कर्मचारियों को पुरस्कार देने से सम्बन्धित योजना की कण्डिका 1 के खण्ड (क) (i) के अन्तर्गत दिया जाता है। यह योजना भारत के गजट असाधारण के भाग 1, खण्ड 1, में अधिसूचना संख्या 12/139/59-एडी०3-बी, दिनांक 5 नवम्बर, 1962 के रूप में प्रकाशित हुई थी।

राजपक्षित अधिकारी होने के कारण श्री रॉब प्रशंसा प्रमाण-पत्र के साथ कोई आर्थिक भत्ता पाने के पात्र नहीं होंगे।

डी० पी० भानन्द, अतिरिक्त सचिव।